कथा सरिता

भावनायें ही सर्वोपरि

एक मन्दिर था। उसमें सब लोग पगार पर थे। आरती वाला, पूजा करने वाला आदमी, घण्टा बजाने वाला भी पगार पर था। घण्टा बजाने वाला आदमी आरती के समय भाव के साथ इतना मशगूल हो जाता था कि होश में ही नहीं रहता था। घण्टा बजाने वाला व्यक्ति पूरे भक्ति भाव से खुद का काम करता था। मन्दिर में आने वाले सभी व्यक्ति भगवान के साथ साथ घण्टा बजाने वाले व्यक्ति के भाव के भी दर्शन करते थे, उसकी भी वाह वाह होती थी।

एक दिन मन्दिर का ट्रस्ट बदल गया और नये ट्रस्टी ने ऐसा आदेश जारी किया कि अपने मन्दिर में काम करने वाले सब लोग पढ़े लिखे होने चाहिए। जो पढ़े लिखे नहीं हैं उन्हें निकाल दिया जाएगा। उस घण्टा बजाने वाले भाई को ट्रस्टी ने कहा कि तुम्हारे आज तक का पगार ले लो, अब से तुम नौकरी पर मत आना। उस घण्टा बजाने वाले व्यक्ति ने कहा, साहेब, भले मैं पढ़ा लिखा नहीं हूँ, परन्तु इस कार्य में मेरा भाव भगवान से जुड़ा हुआ है।

ट्रस्टी ने कहा, सुन लो, तुम पढ़े लिखे नहीं हो, इसलिए मैं तुम्हें यहां नहीं रख सकता। दूसरे दिन मन्दिर में नये लोगों को रख लिया गया। परन्तु आरती में आये लोगों को अब पहले जैसा मज़ा नहीं आता था। घण्टा बजाने वाले व्यक्ति की सभी को कमी महसूस होती थी। कुछ लोग मिलकर घण्टा बजाने वाले व्यक्ति के घर गए और विनती की कि तुम मन्दिर आओ।

उस भाई ने जवाब दिया, मैं आऊंगा तो ट्रस्टी को लगेगा कि नौकरी लेने के लिए आया हूँ, इसलिए मैं नहीं आ सकता। वहाँ आये हुए लोगों ने एक उपाय बताया कि मन्दिर के बिल्कुल सामने आपके लिए एक दुकान खोल के देते हैं। वहाँ आपको बैठना है और आरती के समय घण्टा बजाने आ जाना, फिर कोई नहीं कहेगा कि तुमको नौकरी की ज़रूरत है।

उस भाई ने मन्दिर के सामने दुकान शुरू की। वो इतनी चली कि एक दुकान से सात दुकान और सात दुकान से एक फैक्ट्री खोली। अब वो आदमी मर्सिडीज़ से घण्टा बजाने आता था। समय बीतता गया, ये बात पुरानी सी हो गयी। मन्दिर का ट्रस्टी फिर बदल गया। नये ट्रस्ट को नया मन्दिर बनाने के लिए दान की ज़रूरत थी।

मन्दिर के नये ट्रस्टी को विचार आया कि सबसे पहले उस फैक्ट्री के मालिक से बात करके देखते हैं। ट्रस्टी मालिक के पास गया, सात लाख का खर्चा है, फैक्ट्री के मालिक को बताया। फैक्ट्री के मालिक ने कोई सवाल किये बिना एक खाली चेक ट्रस्टी के हाथ में दे दिया और कहा कि चेक भर लो। ट्रस्टी ने चेक भरकर उस फैक्ट्री के मालिक को वापस दिया। फैक्ट्री के मालिक ने चेक को देखा और उस ट्रस्टी को दे दिया। ट्रस्टी ने चेक हाथ में लिया और कहा कि सिग्नेचर तो बाकी है। मालिक ने कहा कि मुझे सिग्नेचर करना नहीं आता है, लाओ अंगूठा लगा देता हूँ। वही चलेगा। ये सुनकर ट्रस्टी चौंक गया और कहा, साहेब आपने अनपढ़ होकर भी इतनी तरक्की की। यदि पढ़े लिखे होते तो कहाँ होते! तो वह सेठ हँसते हुए बोला, भाई मैं पढ़ा लिखा होता तो बस मन्दिर में घण्टा बजाते होता।

सारांश

कार्य कोई भी हो, परिस्थिति कैसी भी हो, आपकी योग्यता आपकी भावनाओं पर निर्भर करती है। भावनायें शुद्ध होंगी तो ईश्वर और सुन्दर भविष्य पक्का आपका साथ देगा।

उठाओ ही नहीं

बहुत समय पहले की बात है। एक गाँव में एक महात्मा रहते थे। आस-पास के गाँव के लोग अपनी समस्याओं और परेशानियों के समाधान के लिए महात्मा के पास आते थे। और संत उनकी समस्याओं और परेशानियों को दूर करके उनका मार्गदर्शन करते थे। एक दिन एक व्यक्ति ने महात्मा से पूछा - गुरूवर, संसार में खुश रहने का रहस्य क्या है?

महात्मा ने उससे कहा कि तुम मेरे साथ जंगल में चलो, मैं तुम्हें खुश रहने का रहस्य बताता हूँ। उसके बाद महात्मा और वह व्यक्ति जंगल की तरफ चल दिए। रास्ते में चलते हुए महात्मा ने एक बड़ा सा पत्थर उठाया और उस व्यक्ति को देते हुए कहा कि इसे पकड़ो और चलो। उस व्यक्ति ने वह पत्थर लिया और वह महात्मा के साथ साथ चलने लगा।

कुछ देर बाद उस व्यक्ति के हाथ में दर्द होने लगा लेकिन वह चुप रहा और चलता रहा। जब चलते चलते बहुत समय बीत गया और उस व्यक्ति से दर्द सहा नहीं गया तो उसने महात्मा से कहा कि उसे बहुत दर्द हो रहा है। महात्मा ने कहा कि इस पत्थर को नीचे रख दो। पत्थर को नीचे रखते ही उस व्यक्ति को बड़ी राहत मिली।

तब महात्मा ने उससे पूछा- जब तुमने पत्थर को अपने हाथ में उठा रखा था तब तुम्हें कैसा लग रहा था। उस व्यक्ति ने कहा - शुरू में दर्द कम था तो मेरा ध्यान आप पर ज़्यादा था पत्थर पर कम था। लेकिन जैसे जैसे दर्द बढ़ता गया मेरा ध्यान आप पर से कम होने लगा और पत्थर पर ज़्यादा होने लगा और एक समय मेरा पूरा ध्यान पत्थर पर आ गया और मैं इससे अलग कुछ नहीं सोच पा रहा था।

तब महात्मा ने उससे दोबारा पूछा - जब तुमने पत्थर को नीचे रखा तब तुम्हें कैसा महसूस हुआ?

इस पर उस व्यक्ति ने कहा- पत्थर नीचे रखते ही मुझे बहुत राहत महसूस हुई और खुशी भी महसूस हुई।

तब महात्मा ने कहा कि यही है खुश रहने का रहस्य! इस पर वह व्यक्ति बोला - गुरूवर, मैं कुछ समझा नहीं।

तब महात्मा ने उसे समझाते हुए कहा - जिस तरह इस पत्थर को थोड़ी देर हाथ में उठाने पर थोड़ा सा दर्द होता है, थोड़ी और ज़्यादा देर उठाने पर थोड़ा और ज़्यादा दर्द होता है और अगर हम इसे बहुत देर तक उठाये रखेंगे तो दर्द भी बढ़ता जायेगा। उसी तरह हम दुःखों के बोझ को जितने ज़्यादा समय तक उठाये रखेंगे हम उतने ही दुःखी और निराश रहेंगे। यह हम पर निर्भर करता है कि हम दुःखों के बोझ को थोड़ी सी देर उठाये रखते हैं या उसे ज़िंदगी भर उठाये रहते हैं। इसलिए अगर तुम खुश रहना चाहते हो तो अपने दुःख रूपी पत्थर को जल्दी से जल्दी नीचे रखना सीख लो और अगर संभव हो तो उसे उठाओ ही नहीं।

एक बार, दूसरों की नज़र से

एक व्यक्ति का घर शहर से दूर एक छोटे से गाँव में था। उसके घर में किसी भी प्रकार की कोई कमी नहीं थी। लेकिन फिर भी वो खुश नहीं रहता था। उसे लगता था कि शहर की ज़िंदगी अच्छी है। इसलिए एक दिन उसने गाँव के घर को बेचकर शहर में घर लेने का फैसला किया। अगले ही दिन उसने शहर से अपने दोस्त को बुलाया, जो रियल स्टेट में काम करता था। उसने अपने दोस्त से कहा- तुम मेरा ये गांव का घर बिकवा दो और मुझे शहर में एक अच्छा सा घर दिलवा दो। उसके दोस्त ने घर को देखा और कहा - तुम्हारा घर इतना सुन्दर है। तुम इसे क्यों बेचना चाहते हो? अगर तुम्हें पैसों की ज़रूरत है तो मैं तुम्हें कुछ पैसे दे सकता हूँ। उस व्यक्ति ने कहा - नहीं नहीं मुझे पैसों की ज़रूरत नहीं है।

मैं इस घर को इसलिए बेचना चाहता हूँ क्योंकि ये घर शहर से बहुत दूर है। यहाँ पर शहर की तरह पक्की सड़कें भी नहीं हैं। यहाँ के रास्ते बहुत ही उबड़-खाबड़ हैं। यहाँ पर बहुत सारे पेड़ पौधे हैं। जब हवा चलती है तो पूरे घर में पत्ते फैल जाते हैं। ये गाँव पहाड़ों से घिरा हुआ है। अब तुम ही बताओ मैं शहर क्यों न जाऊँ?

उसके दोस्त ने कहा - ठीक है, अगर तूने शहर जाने का सोच ही लिया है तो मैं जल्दी ही तुम्हारे इस घर को बिकवा दूंगा। अगले ही दिन सुबह के समय वह व्यक्ति अखबार पढ़ रहा था। उसने अखबार में एक घर का विज्ञापन देखा। शहर की भीड़ भाड़ से दूर, पहाड़ियों से घिरा हुआ, हरियाली से भरा हुआ, ताज़ी हवा युक्त एक सुन्दर स्थान पर बसा अपने सपनों का घर। घर खरीदने के लिए नीचे दिए गए नंबर पर सम्पर्क करें। उस व्यक्ति को विज्ञापन देखते ही घर पसंद आ गया। उसने जब उस नंबर पर फोन किया तो वो हैरान रह गया। क्योंकि ये विज्ञापन उसी के घर का था। यह जानकर वह खुशी से झूम उठा। उसने अपने दोस्त को फोन लगाया और कहा - मैं तो पहले से ही अपने पसंद के घर में रह रहा हूँ। इसलिए तुम मेरा घर किसी को मत बेचना, मैं यहीं रहूंगा। इस कहानी से हमें ये समझ मिलती है कि अधिकतर लोगों को अपने जीवन से शिकायत होती है। वे सोचते हैं कि उनके जीवन में दुःख ही दुःख भरे पड़े हैं। ऐसे लोगों को दूसरे लोगों की ज़िन्दगी बहुत ही अच्छी लगती है। लेकिन आप ऐसा कभी भी मत करना। कुछ भी करने से पहले एक बार अपनी ज़िंदगी को दोस्तों की नज़रों से ज़रूर देखना। अगर आपने कभी भी अपनी ज़िंदगी को दूसरों की नज़रों से देखा तो आप पायेंगे कि आपकी ज़िन्दगी दूसरों से बहुत ही अच्छी है।

हरदुआगंज-उ.प्र.। आयुष मेला में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए विधायक दलवीर सिंह। साथ हैं क्षेत्रीय चिकित्सा अधिकारी जुगल किशोर राना, ब्र.कु. कमलेश बहन तथा अन्य।

नरवाना-हरियाणा। ओडिशा के राज्यपाल प्रो. गणेशी लाल जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीमा, ब्र.कु. निशा, ब्र.कु. सुभाष तथा ब्र.कु. ईश्वर। साथ हैं राष्ट्रीय सेवक संघ के जिला संघ चालक डॉ. विनोद गुप्ता, आर.एस.एस. के जिला महासचिव शशि शर्मा तथा अन्य।

होडल-हरियाणा। सेवाकेन्द्र के सिल्वर जुबली कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए बायें से ब्र.कु. इंदिरा,हसनपुर, ब्र.कु. उषा,होडल सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. अनुसुइया,राष्ट्रीय संयोजिका,युवा प्रभाग, ब्र.कु. शुक्ला,हरिनगर तथा प्रताप अरोड़ा,डिस्ट्रिक्ट मैनेजर,इंडियन पेट्रोल पम्प।

भुवनेश्वर-यूनिट 8। योग भट्ठी कार्यक्रम के पश्चात् चित्र में राजयोगी ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. दुर्गेश नंदिनी तथा अन्य।

आगरा-शास्त्रीपुरम। सेवाकेन्द्र के वार्षिकोत्सव में दीप प्रज्वलित करते हुए क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. शीला, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मधु, ब्र.कु. सरिता, अविनाश चन्द्र अग्रवाल, प्रो. डॉ. के.के. गौर, ब्र.कु. विभोर तथा अन्य।